सुपर कम्पोस्ट बनाना

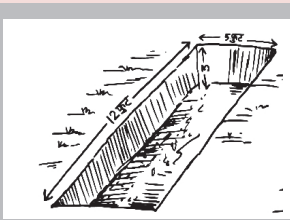

सुपर कम्पोस्ट बनाने के लिये
12X5X3 फुट का तैयार
गड्ढ़ा बनाऐं

वानस्पतिक कचरा एवं
गोबर आदि की 6 इंच मोटी
परत बिछाते हुये

वानस्पतिक कचरे पर
सुपर फास्फेट का भुरकाव
करते हुये

नमी बनाये रखने के लिए
गर्मी के मौसम में 15–20 दिन में
पानी का छिड़काव करते रहें,
3–4 माह में अच्छी सुपर
कम्पोस्ट तैयार हो जायेगी।

गोयल ग्रामीण विकास संस्थान

श्रीरामशान्ताय

जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र

राजस्थान जैविक प्रमाणीकरण संस्थान जयपुर द्वारा प्रमाणित

ग्राम जाखोड़ा, कैथून-सांगोद मार्ग, कोटा - 325001 (राजस्थान)

88759 95439 ggvs@goyalglobal.com www.ggvsglobal.com

कम्पोस्ट

कम्पोस्ट के लाभ

- कम्पोस्ट टिकाऊ खेती के लिये बहुत सस्ता व सरल विधि से बनाया गया जैविक खाद है।
- सुपर कम्पोस्ट के उपयोग से मिट्टी की जल धारण क्षमता बढ़ जाती है। अतः लम्बे समय तक भूमि में नमी बनी रहती है।
- सुपर कम्पोस्ट के उपयोग से खेत में खरपतवार व दीमक का प्रकोप कह होता है।
- इस खाद में गोबर की खाद की तुलन में अधिक मात्रा में पोषक तत्व पाये जाते है।
- मिट्टी की भौतिक दशा सुधरती है। जिससे वायु का संचार बढ़ता है।

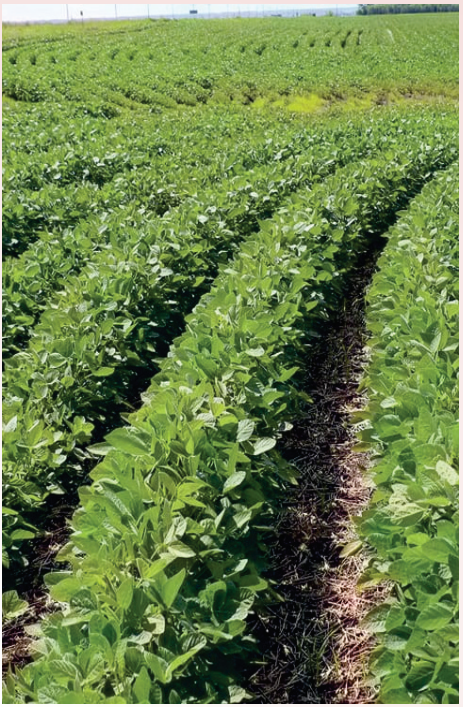

सुपर कम्पोस्ट बनाने की विधि

सुपर कम्पोस्ट बनाने के लिए 12X5X3 फुट का एक गड्ढ़ा तैयार करें। कृषक के खेत के वानस्पतिक कचरे एवं पशुओं के गोबर की 6 इंच मोटी परत बिछाकर उसके ऊपर फॉस्फेस्ट पाउडर भुरकें तथा पुनः वानस्पतिक कचरे की परत लगावें तथा सुपर फॉस्फेस्ट की परत लगाएं इस प्रकार गड्ढ़े को 1–1, 5 फुट ऊँचाई तक भरने के बाद मिट्टी से ढ़क देवें। नमी बनाये रखने के लिये गर्मी के मौसम में 15 से 20 दिन में पानी छिड़कते रहें। 3–4 माह में वानस्पतिक कचरे अच्छी तरह सड़कर बहुत अच्छी सुपर कम्पोस्ट तैयार हो जायेगी, जिसे खेत में जुताई से पूर्व बिखेरकर जुताई क दें। सुपर कम्पोस्ट में गोबर की खाद की तुलना में अधिक मात्रा में फॉस्फोरस व अन्य पोषक तत्व होते है।

इसको और गुणवत्तायुक्त बनाने हेतु निम्नलिखित आदान भी मिश्रित कर सकते है।

1.	फसल अवशिष्ट	–	20 प्रतिशत
2.	रॉक फास्फेट	–	5 प्रतिशत
3.	राख	–	1 प्रतिशत

5.	जिप्सम	–	1 प्रतिशत (यदि भूमि का pH ज्यादा हो)
6.	सुहागा	–	0.1 प्रतिशत
7	नीमखली	–	एक एकड़ के खाद की मात्रा के साथ 100 मिलोग्राम नीम खली

उपरोक्त आदानों का उपयोग विशेषज्ञों की सलाह पर ही करें।

इस खाद को कुछ विशेषज्ञों द्वारा प्लास्टिक से भी हकवाया जाता है। आप भी हाक सकते है। कुछ इसी पद्धति को गड्ढ़े के संग अजमाते है। आप भी अपना सकते है।

जीवामृत बनाने हेतु 200 लीटर पानी को ड्रम में डालकर 20 किलोग्राम ताजा गोबर, 10 लीटर गोमूत्र, 20 किलोग्राम गुड़/खण्ड/गुड़ की फेक्ट्री में बचा हुआ अवशेष, मिठे फल का गुदा, 2 किलोग्राम चने का आटा बेसन, दाल चूरी व 500 ग्राम मिट्टी (खेत के मेड़ या पुराने पेड़ की) सब मिलाकर हिलाकर हवादार ढक्कन लगाकर छायादार जगह में पडा रहने दे। सुबह–शाम हिलाए। 48 घण्टे बाद एक एकड़ में उपयोग होने वाले गोबर के ढ़ेर में डाल दे। 15 दिन में एक बार, मतलब 45 दिन में 3 बार डाले। नमी बनाए रखें नमी के लिए पानी छिड़के सूर्य की सीधी किरणों व बारिश की बौछार से बचाने हेतु धान/मक्का/गैहूँ/बाजरा या फसल अवशिष्ट से ढ़क दे मात्र 45 दिन में केंचुआ खाद से भी बेहतरीन खाद तैयार हो जाएगा।

साधारण कम्पोस्ट खाद बनाने की विधि

देश भर में खेती के लिए उपयोग होने वाला खाद न्यून गुणवत्ता वाला है। क्योकि वर्तमान में गोबर का खाद न बनाकर रेडवी, आकुडा आदि रूप में संग्रहित किया जता है। जो सर्वदा अनुचित है। इस तरह की खाद का उपयोग फसल की उत्पादकता को कम करता है। वस्तुतः उपरोक्त गोबर को खाद रूप में बनाने हेतु जीवाणुओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उक्त जीवाणुओं का उपयोग व मात्रा बढ़ाने के लिए जीवामृत नामक आदान महत्वपूर्ण है।